निबंध
विषय धर्म और धर्मात्मा

धर्म कहते किसे है ?
धर्म तो वस्तु का स्वभाव है ।
धर्म कोई शरीर की किर्या का नाम नही आत्मा की परणीनिती का नाम है ।
धर्म कोई सम्प्रदाय नही धर्म कोई वाड़ी नही ,किसी व्यक्ति विशेष का नाम नही है
धर्म किसी नदी के पास नही ,किसी के चरणों के पास नही ,किसी तीर्थ में नही है , धर्म तो स्वय का सहज भाव ही है ।
स्वय की अनुभूति का नाम धर्म है ।

धर्मात्मा धर्म से युक्त जीव ,,धर्म से युक्त परणीनिती ही धर्मात्मा है ।
जो धर्म को धारण कर सुख और आंनद का अनुभव करे वो ही धर्मात्मा है ।

तत्वार्थ सूत्र जी मे एक प्रश्न पूछा गया है।
प्रश्न धर्म बड़ा या धर्मात्मा बड़ा ? दोनो अलग अलग वस्तु नही है ।धर्म धर्मात्मा के आश्रय से रहता है ।दोनो एक दूसरे के बिना अधूरे है ।
पंडित आशा धर जी ने अनगार धर्मामर्त में बताया है कि इस जगत में दो तीर्थ है ।
पहला जिनवाणी और दूसरा जिनवाणी के ज्ञाता विद्धवान ।इन दोनों तीर्थो के माध्यम से जीव संसार सागर से पार उतर सकता है।
धर्मात्मा को चलते फिरते तीर्थ और जीवंत तीर्थ कहा है ।

रत्नाकरंड श्रावकाचार जी ग्रन्थ में 26 वी गाथा में बताया गया है कि जो कोई जीव गर्व से धर्मात्मा का त्रिस्कार करता है तो वो उसका नही अपने धर्म का त्रिस्कार करता है ।यह विराधना कोई उनकी नही है हमारे स्वय की विराधना है ।
भूल से भी घमंड में धर्मात्मा की विराधना नही कर बैठना क्योंकि धर्मात्मा केआश्रय से ही धर्म पलता है ।जिस समाज मे ,शहर में ,गॉव में धर्मात्मा का अपमान होता हो तो वो समाज ,शहर ,गॉव सम्यक्क्तव हींन ,व्रत ,तप ,संयम हीन ही रहता है ।

कोई भी जीव दूसरे का विरोध नही करता है क्योंकि वो उस समय स्वय ही ऐसा पाप का बंध करता है कि वो स्वय की भव भावन्तर तक विरोध को प्राप्त होता है ।दुसरो का विरोध कर हमने अपना भविष्य ही ख़तरे में डाल दिया ।जगत में कोई जीव किसी को ठग नही सकता कोई किसी पर उपकार नही कर सकता ।दुसरो का बुरा करने का भाव हो तो स्वय का बुरा होता है ।
यदि धर्मात्मा नही होंगे तो हमे उपदेश कौंन देगा और हमें रत्नत्रय की प्राप्ति कैसे होगी !!
इसलिये धर्मात्मा की विराधना नही करनी चाहिए क्योंकि उनके बिना धर्म नही हो सकता ।
अनादि इस जीव को परद्रव्य की ही महिमा है ,पर में ही एकाग्रता है यही कारण है कि सारे निमित ,सत ,समागम मिलने के बावजूद भी जीव विषय कषया मे ही प्रवत रहा है ।
अरे बच्चो की क्या कहे अभी माता पिता में भी स्व को जानने की तालाबेली नही लगी है ।बस परम्परा के वसीभूत हो पूजा प्रक्षाल कर लिया और फिर स्वय को धर्मात्मा समज़ अन्य सांसारिक कार्यो में रुचिपूर्वक समय व्यतीत करते है ।
ऐसा नही की जीव को सच का पता नही परंतु सब मालूम होते हुए भी जीव इस संसार से विरक्त नही होता और ना ही स्वय को समज़ने का प्रयास करता है ।

आजकल इतनी सुविधा हो गई है कि घर बैठ कर भी समस्त आगम को जान सकते है लेकिन पर का आकर्षण इतना है कि जीव को स्वय को समझने का समय ही नही है और समय मिलता भी है तो मात्र विकथाओ में ही गवा देता है ।
इसके लिए क्या करे कि जीव को स्व के अध्ययन की पिपासा जाग्रत हो जाए ।
यदि घर के बड़े स्वय को जानने का पुरुसार्थ करगे तो निश्चित ही अपने बच्चो में भी धर्म के संस्कार डालने की कोशिश करेंगे । ना जनेवो घड़ी कब आएगी जब घर घर मे पाठशाला होगी और हर सदस्य सबको उपदेश देने के लिए तैयार होगा ।
आजकल बच्चो में बाहर के संस्कार इस तरह हावी है कि जैन होते हुए भी जैन संस्कृति की खबर ही नही है ।
इस समस्या का एक मात्र यही इलाज है कि घर घर पाठशाला हो और हर घर मे माँ स्वय अपने बच्चो को संस्कारित कर अपना फर्ज निभाये । बच्चो के अंदर कैसे भी धर्म के प्रति सच्चि रुचि जाग्रत करे एक यही भावना है ।
आजकल जो घर घर पाठशाला का आयोजन हो रहा है वो बहुत ही उत्तम है ।
पाठशाला के माध्यम से बच्चों में संस्कृति की रक्षा करना ,,समाधि के संस्कार डालने चाहिए ।
बच्चो में समता भाव ,विवेक ,श्रेश्ठता का गुण ,निडरता , आत्मविश्वासः ,सदाचार ,सत्यवादी ,कार्यकुशलता के गुण होने चाहिए ।
बच्चो के अंदर कैसे भी धर्म के प्रति रुचि जाग्रत करे ,छोटे छोटे पाठ आदि को खेल खेल में याद कराने का प्रयास करे ।
अभी आजकल सब धर्म की बहुत उच्च स्तर पर प्रभवना कर रहे है लेकिन जिसको रुचि है वो ही इस सबका लाभ ले रहे है अन्य नही इसलिये कैसे भी जीव को रुचि जाग्रत हो जाये यह प्रथम प्रयास होना चाहिए।
जब तक जीव को इस संसार मे सुख की मिथ्या बुद्धि पड़ी है जब तक जीव स्वय को समझने का पुरुसार्थ ही नही करेगा ।
शिक्षक को सर्वप्रथम से ही भेदविज्ञान कि कला को सीखाने के बीज बच्चो में डालने चाहिए ।
भगवान कुन्द कुन्द आचार्य को माँउंन्हे हमेशा आध्यात्मिक लोरिया सुनाती थी ।
शुधोसी ,बुधोसी ,निरंजनोसि

शिक्षक को पहले बच्चो के मन को पढ़ना आना चाहिए जिससे वो जो भी उपदेश दे व्व बच्चे उसको कहा तक समज़ सकते है
किसी भी तरह बच्चो में स्वय को समझने की ललक जाग्रत हो जाये जिससे वो स्वय को अपने धर्म के प्रति पूर्ण समपर्ण कर सके ।
जो भी बच्चो को संस्कारित करे व्व स्वय भी भेदविज्ञान की कसौटी पर खरे उतरे ।
बच्चो में इतनी रुचि जाग्रत हो जाये की लोक् की पढ़ाई की कोई अहमियत ही नही रहे ।यह भव एक मात्र स्वय को जानकर निज वैभव का पोषड करने के लिए मिला है ऐसा पक्का श्रदान इस विश्व के समस्त बच्चो में जाग्रत होना चाहिए ।
बच्चो में यह स्व और पर का विवेक होना चाहिए ।यदि हम स्व को भुलगे तो हमारी क्या दशा होगी ।
भगवान तो वीतरागी है और पूर्ण सुखी है ।ऐसी कौंन सी पावर है जो हमे सच्चे सुख की प्राप्ति कराता है ।ऐसा ज्ञान होना अति आवश्यक है ।क्योंकि यह सब जानने के बाद ही बच्चो में पूर्ण सुखी होकर सिध्दशीला को वरने का भाव उत्पन्न होगा ।
अरे लोक् की पढ़ाई तो एक मात्र इस भव में सुखी करती है ,वो भी कोई गारंटी नही ,वो भी आपके पुण्य प्रक्तियो पर आश्रित है ।धर्म की पढ़ाई तो इस भव में और अन्त भवो तक सुख रूप और कल्याणकारी है ।
बच्चो में धर्म के मूल सिध्दांतों का ज्ञानअति आवश्यक है ।
पूज्य गुरुदेव श्री की सभा मे कोई बच्चा भी बैठता था तो उनको भी यही उपदेश था कि हे भव्य स्वय को जानने का पुरुसार्थ कर एक मात्र यह भव इसी के लिए मिला है स्वय को उठते बैठते सोते जागते एक मात्र ज्ञायक ही अनुभव कर ।

चारो अनुयोगों का तात्पर्य एक मात्र वीतरागता है यह ज्ञान होना अति आवश्यक है ।
अन्य सारे बाहरी प्रपंच एक मात्र संसार का पोसड है ।
एक मात्र जैन धर्म ही ऐसा है जिसमे मात्र वीतरागता ,अकर्तापने के सिंद्धान्तों का समावेश है ।
एक मात्र जैन धर्म मे ही हमे भगवान समान मान कर भगवान बनने की विधि का समावेश है ।
समस्त समाधान का एक मात्र उपाय स्वआध्या है और यही परम तप है ।
सभी जीव स्व का अबलोकन कर जल्द ही अपने अस्तित्व का मूल्यांकन करे एक यही भावना है ।

वर्तमान में आन लाइन स्वाधाय का बहुत ही उत्तम सहयोग है सभी साधर्मीजन का
अभी मैं स्वय तीन ग्रुप में हु जिनमे योगसारजी ,तत्वार्थ सूत्र जी और गोम्मटसार जी का चल रहा है ।
मै बहुत बहुत आभारी हूं उन सबकी जिन्होंने मुक्षे ऐसे धार्मिक ग्रुपो से जोड़ दिया है जिससे मेरी मिथ्यात्व रूपी शल्य निरंतर खुल रही है ।
बहुत बहुत आभार है उन सभी विद्वानों का जो स्वय का पूरा समपर्ण जैनधर्म को समजाने में लगा रहे है और एक मात्र यही सच्चि प्रभवना है ।
मेरा भी बहुत भाव होता है जैन धर्म की प्रभवना करने का क्योंकि एक जैन धर्म ही शरण है जिसमे स्वय को समझ कर मॉक्षमार्ग को प्रसस्त करने में ।
सभी जीव जैन धर्म के मर्म को समज़ कर शीघ्र ही सिद्दत्व कि प्राप्ति कर एक यही मंगल भावना है ।
मैं इस मे इतना और कहना चाहूंगी कि,, यदि माता,--पिता को अपनी वृद्ध अवस्था को दुख मय न बनाना हो,,अपने ही बेटे बहु की उपेक्षा सहन न करनी हो तो,,,,,बच्चों में अभी से,,यानी उनके मुंह बोलते ही,,उनको धर्म की शिक्षा देना शुरू कर दे,,---सहज शैली में,,,,,,,बेटे तो एक ही घर को शोभित करते है,, लेकिन बेटियाँ --दो घर को रोशन करती है।

🙏🙏🙏
प्रीति जैन, Agra 9897494933